



भारतीय ज्ञान प्रणाली और डिजिटल उन्नति

डॉ मंजू वर्मा

प्राचार्य

द्रोणकॉलेज ऑफ़ एजुकेशन सरधना मेरठ

ईमेलआईडी: vermamanju1975@gmail.com

सारांश: भारत में शिक्षा की जड़ें वैदिक काल से हैं। वेद, ब्राह्मण और उपनिषद जैसे प्राचीन ग्रंथों ने प्रारंभिक अवस्थाओं के दौरान गहन ज्ञान साझा किया। उच्च शिक्षा व्यक्तियों को मानवता के सामने आने वाली महत्वपूर्ण सामाजिक, आर्थिक, सांस्कृतिक, नैतिक और आध्यात्मिक चुनौतियों के बारे में गंभीरता से सोचने की अनुमति देती है। यह मानव संसाधनों का अधिकतम उपयोग करने के लिए आवश्यक है, विशेष रूप से 15 से 59 वर्ष की आयु के लोगों के लिए। भारतीय शिक्षा प्रणाली में तकनीकी शिक्षा, वाणिज्य, कला, चिकित्सा, वास्तुकला और चार्टर्ड अकाउंटेंसी सहित कई क्षेत्र शामिल हैं। यह वैश्विक स्तर पर तीसरी सबसे बड़ी उच्च शिक्षा प्रणाली है। हालाँकि, आबादी का एक बड़ा हिस्सा निरक्षर है और कई बच्चों को बुनियादी शिक्षा भी नहीं मिलती है। इन बाधाओं के बावजूद, भारत की उच्च शिक्षा प्रणाली इन मुद्दों को संबोधित करने और एक मजबूत अंतरराष्ट्रीय उपस्थिति स्थापित करने के लिए कई अवसर प्रस्तुत करती है। सफल होने के लिए, इसे विश्वविद्यालयों और कॉलेजों की विकसित भूमिकाओं के अनुकूल होने और सीखने के तरीकों पर नए शोध को शामिल करते हुए पारदर्शिता और जवाबदेही में सुधार करना होगा। भारत को कुशल पेशेवरों का उत्पादन करने के लिए जाना जाता है जो अन्य देशों में योगदान करते हैं, जो इसे विकासशील से विकसित राष्ट्र में बदलने के लिए अच्छी स्थिति में रखते हैं। भारत में डिजिटल शिक्षा का उदय सीखने और संरचनात्मक विकास में महत्वपूर्ण प्रगति को दर्शाता है, जो ज्ञान प्राप्ति के लिए प्रौद्योगिकी का लाभ उठाता है। कोविड-19 महामारी ने प्रौद्योगिकी-आधारित शिक्षा की तत्काल आवश्यकता को उजागर किया, जिससे भारत में सीखने के लिए अधिक आधुनिक दृष्टिकोण का मार्ग प्रशस्त हुआ।

मूल शब्द: उच्च शिक्षा प्रणाली, आधुनिक दृष्टिकोण, डिजिटल उन्नति

प्रस्तावना: भारतीय ज्ञान प्रणाली प्रभाग अक्टूबर 2020 में शिक्षा मंत्रालय का हिस्सा बनाया गया था। इसका लक्ष्य पारंपरिक सीमाओं को पार करने वाले शोध को प्रोत्साहित करना, भारतीय प्रणालियों से संबंधित ज्ञान की रक्षा करना और उसे साझा करना तथा समाज में इस समझ को लागू करना है। प्रभाग इन प्रणालियों पर केंद्रित केंद्रों के निर्माण और विभिन्न शोध परियोजनाओं के लिए सहायता और वित्त पोषण प्रदान करता है। यह अन्य संगठनों के सहयोग से स्नातक छात्रों के लिए इंटरनशिप कार्यक्रम, संकाय विकास पहल, कार्यशालाएं और आउटरीच गतिविधियाँ भी प्रदान करता है। एक उल्लेखनीय परियोजना आईकेएस विकी पोर्टल है, जो विभिन्न भारतीय भाषाओं में लेख प्रकाशित करने की अनुमति देता है, जिससे जागरूकता फैलाने और पारंपरिक ज्ञान से जुड़ने में मदद मिलती है। इसका मुख्य उद्देश्य भारतीय ज्ञान प्रणालियों को मान्यता देने से कहीं अधिक है; यह उन्हें आधुनिक शिक्षा और अनुसंधान में पुनर्जीवित और एकीकृत करना चाहता है। प्रभाग का उद्देश्य पारंपरिक भारतीय ज्ञान को समकालीन प्रथाओं से जोड़ना भी है। ऐसा करके, यह एक जीवंत परंपरा को पोषित करने की उम्मीद करता है जो नए ज्ञान के विकास को बढ़ावा देती है और भारतीय सिद्धांतों में निहित भविष्य के नवोन्मेषकों और विद्वानों को प्रोत्साहित करती है। ध्यान केवल सुश्रुत और आर्यभट्ट जैसे ऐतिहासिक व्यक्तित्वों पर चर्चा करने पर ही नहीं है, बल्कि ऐसा माहौल बनाने पर भी है जो उनकी भावना में नए विचारकों के उद्भव को प्रेरित करे। भारतीय दृष्टिकोण स्थिरता और सभी के कल्याण पर जोर देता है, हमारी समृद्ध विरासत को पुनः प्राप्त करने और दुनिया के सामने इस अनूठी जीवन शैली को प्रदर्शित करने के महत्व पर प्रकाश डालता है। इसके लिए भविष्य के विद्वानों को प्रशिक्षित करने की आवश्यकता है जो हमारी सभ्यता की विशिष्ट जीवन शैली को मूर्त रूप दे सकें और प्रस्तुत कर सकें।

एनईपी 2020 भारतीय ज्ञान और विचार की बहुमूल्य विरासत को मार्गदर्शक सिद्धांत के रूप में स्वीकार करता है। भारतीय ज्ञान प्रणालियों में ज्ञान, विज्ञान और जीवन दर्शन शामिल हैं, जो अनुभव, अवलोकन, प्रयोग और गहन विश्लेषण के माध्यम से विकसित हुए हैं। इस परंपरा ने शिक्षा, कला, प्रशासन, कानून, न्याय, स्वास्थ्य, विनिर्माण और वाणिज्य जैसे विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित किया है। इसने भारत की शास्त्रीय और क्षेत्रीय भाषाओं को भी आकार दिया है, जो लिखित ग्रंथों, मौखिक कहानी और कला के माध्यम से

प्रसारित हुई हैं। "भारत के ज्ञान" की अवधारणा में प्राचीन काल की अंतर्दृष्टि शामिल है, जो उपलब्धियों और चुनौतियों पर प्रकाश डालती है, साथ ही शिक्षा, स्वास्थ्य और पर्यावरण जैसे क्षेत्रों में भविष्य की आकांक्षाओं को भी उजागर करती है।

भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ समय के साथ संचित ज्ञान, प्रथाओं और नवाचारों की एक विशाल श्रृंखला का प्रतिनिधित्व करती हैं, जो गणित, खगोल विज्ञान, चिकित्सा, दर्शन और पारिस्थितिकी जैसे विषयों में फैली हुई हैं। आधुनिक विज्ञान में योगदान देने की उनकी क्षमता के बावजूद, इन प्रणालियों को अक्सर शिक्षा प्रणाली में अनदेखा किया गया है। सदियों से, भारत में लोगों ने प्रकृति के सावधानीपूर्वक अवलोकन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया है, जिससे टिकाऊ कृषि पद्धतियाँ, हर्बल दवा और पारिस्थितिकी तंत्र प्रबंधन का विकास हुआ है। आईकेएस और इसकी प्रथाओं का अध्ययन करने के लिए वैज्ञानिक तरीकों को लागू करके, हम उनके मूलभूत सिद्धांतों को उजागर कर सकते हैं, उनकी प्रभावशीलता को मान्य कर सकते हैं और वर्तमान चुनौतियों को हल करने में उनके अनुप्रयोगों का पता लगा सकते हैं। आईकेएस का विश्लेषण कई क्षेत्रों में नवाचार को भी प्रेरित कर सकता है। समकालीन मुद्दों से निपटने के लिए आईकेएस को आधुनिक तकनीकों के साथ जोड़ने के महत्व की बढ़ती स्वीकृति है। भारत में नेशनल इनोवेशन फ़ाउंडेशन (NIF) और हनी बी नेटवर्क जैसी पहल आईकेएस में निहित जमीनी स्तर के नवाचारों को प्रलेखित करने, मान्य करने और बढ़ावा देने पर ध्यान केंद्रित करती हैं।

भारतीय ज्ञान प्रणाली के प्रमुख लाभों में से एक इसका व्यापक दृष्टिकोण है, जिसमें अनुभवजन्य डेटा, सैद्धांतिक अवधारणाएँ, अनुभवात्मक ज्ञान और आध्यात्मिक अंतर्दृष्टि सहित विभिन्न प्रकार के ज्ञान शामिल हैं। IKS के कई पहलुओं को वैज्ञानिक शोध द्वारा समर्थित किया गया है। उदाहरण के लिए, आयुर्वेद, एक प्राचीन भारतीय चिकित्सा प्रणाली, कई वैज्ञानिक परीक्षणों से गुज़री है और रोकथाम, जीवनशैली में बदलाव और अनुरूप उपचारों पर केंद्रित समग्र स्वास्थ्य सेवा रणनीतियाँ प्रदान करती है। योग के लाभों को बढ़ते प्रमाणों द्वारा भी समर्थित किया जाता है जो शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक कल्याण और जीवन की समग्र गुणवत्ता पर इसके सकारात्मक प्रभावों को उजागर करते हैं। राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 ने विभिन्न क्षेत्रों में शैक्षिक कार्यक्रमों में आईकेएस को शामिल करने के महत्व पर जोर दिया। आईकेएस से समृद्ध शिक्षा छात्रों

को जीवन पर एक समग्र दृष्टिकोण प्रदान कर सकती है। उदाहरण के लिए, यह आईकेएस के लिए केंद्रीय हैं जो पर्यावरण संरक्षण पर ध्यान केंद्रित करते हैं और प्रकृति के साथ सह-अस्तित्व को बढ़ावा देते हुए समाज में लचीलापन बढ़ाते हैं। शिक्षा में आईकेएस सिद्धांतों को शामिल करने से छात्रों को मानवीय क्रियाओं और पर्यावरण और समाज पर उनके प्रभावों के बीच संबंधों को समझने में मदद मिलती है। आईकेएस से जुड़ने और इसे आधुनिक मुद्दों से जोड़ने से छात्रों को टिकाऊ प्रथाओं के महत्व की सराहना करने का अवसर मिलता है।

आईकेएस प्रभाग के मुख्य सिद्धांत: आईकेएस प्रभाग अपनी गतिविधियों में संलग्न होने पर तीन प्रमुख सिद्धांतों के आधार पर कार्य करता है:

1. **परम्परा:** यह सिद्धांत भारतीय ज्ञान प्रणालियों की समृद्ध विरासत के महत्व पर जोर देता है। आईकेएस प्रभाग पीढ़ियों से चली आ रही ज्ञान को संरक्षित करने का प्रयास करता है, जो पूरे इतिहास में भारत की अखंड ज्ञान परंपराओं को प्रदर्शित करता है।
2. **दृष्टि:** भारतीय ज्ञान प्रणालियाँ मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करती हैं जो उनकी अनूठी प्रकृति को परिभाषित करती हैं। पारंपरिक ज्ञान को आधुनिक समझ के साथ मिलाकर, हमारा लक्ष्य वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों का प्रभावी ढंग से समाधान करना है, जो दोनों दृष्टिकोणों की ताकत को शामिल करते हुए सर्वांगीण समाधान प्रदान करते हैं।
3. **लौकिक - प्रयोग:** प्रभाग भारत और विश्व के सामने वर्तमान और भविष्य की चुनौतियों से निपटने में भारतीय ज्ञान प्रणालियों के व्यावहारिक अनुप्रयोगों को प्रदर्शित करना चाहता है। स्वास्थ्य, प्रौद्योगिकी और सामाजिक कल्याण जैसे महत्वपूर्ण सामाजिक मुद्दों पर ध्यान केंद्रित करके, आईकेएस परियोजनाएँ भारतीय ज्ञान प्रणालियों को मुख्यधारा की चर्चाओं में एकीकृत करके आज की दुनिया में एक उल्लेखनीय प्रभाव पैदा करने का प्रयास करती हैं।

भारत में डिजिटल शिक्षा: डिजिटल शिक्षा से तात्पर्य एक सीखने के दृष्टिकोण से है जिसमें तकनीक शामिल है। यह विधि छात्रों को दुनिया में कहीं से भी ज्ञान और जानकारी तक पहुँचने की अनुमति देती है। भारत में, डिजिटल शिक्षा को सीखने के भविष्य के रूप में देखा जाता है।

जब से लॉकडाउन शुरू हुआ है, देश भर के राज्यों ने छात्रों को शिक्षित करने के लिए मौजूदा डिजिटल संसाधनों का लाभ उठाते हुए, COVID-19 द्वारा उत्पन्न चुनौतियों का तेज़ी से सामना किया है। शिक्षकों, यहाँ तक कि तकनीकी पृष्ठभूमि वाले लोगों ने भी युवा पीढ़ी को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्रदान करने के लिए नए कौशल सीखते हुए, इस अवसर पर आगे आकर काम किया है।

इस चर्चा में भारत में डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के उद्देश्य से विभिन्न सरकारी पहलों को शामिल किया गया है।

भारत में डिजिटल शिक्षा का महत्व: डिजिटल साक्षरता में तकनीक के माध्यम से सीखना शामिल है, और इसका उद्देश्य पूरे देश में सभी छात्रों को ज्ञान प्राप्त करने में मदद करना है। भारत सरकार ने शैक्षिक संसाधनों को व्यापक रूप से फैलाने के लिए विभिन्न चैनल और पहल की स्थापना की है। डिजिटल शिक्षा के तेज़ी से विकास को पहचानते हुए, सरकार ने एक नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) शुरू की है जो सीखने की प्रक्रिया में डिजिटलीकरण और प्रौद्योगिकी के महत्व पर प्रकाश डालती है। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में प्रशिक्षण बढ़ाने के लिए शैक्षिक प्रौद्योगिकी (एडटेक) पर भी ध्यान केंद्रित किया गया है। यह प्रयास यह सुनिश्चित करने के लिए शुरू किया गया था कि गुणवत्तापूर्ण शिक्षा टियर 2 और टियर 3 शहरों और गांवों तक पहुँचे। जो कभी एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य की तरह लग रहा था, उसे अब पूरे देश में सफलतापूर्वक लागू किया गया है।

भारत में डिजिटल शिक्षा का उद्देश्य कई प्रमुख लक्ष्य हासिल करना है:

1. भारत की भाषाई विविधता को दर्शाने के लिए विभिन्न स्थानीय भाषाओं में उच्च गुणवत्ता वाली डिजिटल सामग्री तैयार करना।
2. वर्चुअल प्रशिक्षण कार्यक्रम और प्रयोगशालाएँ, साथ ही उन्नत कौशल विकास पाठ्यक्रम विकसित करना।
3. डिजिटल डिवाइड को संबोधित करने के लिए ऑनलाइन शिक्षा के लिए दिशानिर्देश स्थापित करना।
4. सीखने के माहौल को बेहतर बनाने के लिए डिजिटल कक्षाएँ बनाना।
5. भारतीय शिक्षा प्रणाली को एकीकृत करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग करना।

6. डिजिटल आकलन के लिए एक ढांचा तैयार करना जो वेब पोर्टल, वेबिनार, मोबाइल एप्लिकेशन, टीवी, रेडियो और पॉडकास्ट जैसे विभिन्न प्लेटफार्मों के माध्यम से छात्रों और शिक्षकों दोनों के लिए एक सुसंगत अनुभव प्रदान करता है।
7. किसी भी समय और कहीं भी शिक्षा तक पहुँच की अनुमति देने के लिए मोबाइल फोन के उपयोग को बढ़ावा देना।
8. शिक्षकों को अपने शिक्षण अभ्यासों में ई-लर्निंग संसाधनों को शामिल करने के लिए प्रोत्साहित करना।
 - **भारत में डिजिटल शिक्षा पहल:** कोविड-19 महामारी के दौरान, डिजिटल शिक्षा भारत में छात्रों के लिए सीखने का प्राथमिक साधन बन गई। भारत सरकार ने कई एप्लिकेशन, चैनल, पोर्टल और अन्य संसाधनों के माध्यम से ऑनलाइन सीखने का समर्थन करने के लिए विभिन्न पहल की। यह लेख ई-लर्निंग के लाभों और चुनौतियों के साथ-साथ इन पहलों पर चर्चा करता है।
 - **पीएम ई-विद्या** एक प्रमुख पहल है जो डिजिटल शिक्षा के उद्देश्य से सभी प्रयासों को जोड़ती है, जिससे सीखने के लिए लचीली पहुँच मिलती है। यह कार्यक्रम देश भर में लगभग 250 मिलियन स्कूली बच्चों की मदद करने के लिए बनाया गया है और डिजिटल, ऑनलाइन, टीवी, रेडियो और पॉडकास्ट सहित विभिन्न प्लेटफार्मों पर शैक्षिक संसाधनों की एक विस्तृत श्रृंखला प्रदान करता है।
 - **2017 में लॉन्च की गई दीक्षा**, स्कूली शिक्षा के लिए एक एकीकृत डिजिटल प्लेटफॉर्म के रूप में कार्य करती है, जो सभी राज्यों के लिए सुलभ है और मोबाइल ऐप और वेब पोर्टल के माध्यम से ग्रेड 1 से 12 तक को कवर करती है।
 - **विद्या दान शैक्षिक सामग्री** के राष्ट्रीय स्तर के योगदान की सुविधा प्रदान करता है, जिससे विशेषज्ञों और शैक्षिक संगठनों को स्कूलों के लिए ई-लर्निंग संसाधन दान करने की अनुमति मिलती है।
 - **ई-पाठशाला ऐप और वेब पोर्टल** के माध्यम से ई-पाठ्यपुस्तकों तक पहुँचा जा सकता है, जो अंग्रेजी, संस्कृत, उर्दू और हिंदी जैसी विभिन्न भाषाओं में एनसीईआरटी ऑडियो और वीडियो सामग्री प्रदान करते हैं।

- **शिक्षा वाणी सीबीएसई** का एक रेडियो कार्यक्रम है जो कक्षा 9 से 12 तक के छात्रों के लिए बनाया गया है, जिसमें सभी विषयों के 430 से अधिक ऑडियो टुकड़े शामिल हैं।
- **राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी)** को कक्षा IX से XII तक के छात्रों के लिए बड़े पैमाने पर ओपन ऑनलाइन पाठ्यक्रम (एमओओसी) विकसित करने और साझा करने के लिए राष्ट्रीय समन्वयक नामित किया गया है। ये पाठ्यक्रम SWAYAM पोर्टल और मोबाइल ऐप के माध्यम से उपलब्ध होंगे, जिसका उद्देश्य डिजिटल अंतर को कम करना और शैक्षिक पहुंच को बढ़ाना है। • राष्ट्रीय शिक्षा नीति (एनईपी) 2020 के अनुसार, चार राष्ट्रीय पाठ्यचर्या रूपरेखा (एनसीएफ) विकसित की जाएंगी: प्रारंभिक बचपन देखभाल और शिक्षा, स्कूली शिक्षा, शिक्षक शिक्षा और वयस्क शिक्षा। शिक्षा मंत्रालय और एनसीईआरटी जिला-स्तरीय परामर्श और सर्वेक्षणों के माध्यम से राज्य पाठ्यचर्या रूपरेखा (एससीएफ) बनाने की एक व्यापक योजना पर सहयोग कर रहे हैं। ये मसौदा एससीएफ पूरी प्रक्रिया के दौरान एनईपी 2020 की सिफारिशों को ध्यान में रखते हुए एनसीएफ के गठन में योगदान देंगे।
- **राष्ट्रीय स्तर पर, NCERT** पाठ्यक्रम कार्यान्वयन के बारे में विभिन्न हितधारकों से प्रतिक्रिया एकत्र करने के लिए MyGov पोर्टल पर एक सर्वेक्षण करेगा। इसके अतिरिक्त, NCERT जमीनी स्तर पर प्रतिक्रिया प्राप्त करने के लिए प्रत्येक राज्य और केंद्र शासित प्रदेश में 2-3 जिला-स्तरीय परामर्श आयोजित करेगा। इन जिला परामर्शों और राष्ट्रीय सर्वेक्षण से प्राप्त जानकारी राष्ट्रीय फ़ोकस समूहों को प्रासंगिक विषयों पर 25 स्थिति पत्र बनाने में सक्षम बनाएगी। ये स्थिति पत्र, राज्य पाठ्यक्रम रूपरेखा (SCF) के मसौदे के साथ, चार राष्ट्रीय पाठ्यक्रम रूपरेखा (NCF) तैयार करने में मदद करेंगे। पूरी प्रक्रिया एक कागज़ रहित दृष्टिकोण अपनाएगी, जिसमें परामर्श और रिपोर्ट तैयार करने के लिए विशेष रूप से डिज़ाइन किए गए प्रौद्योगिकी प्लेटफ़ॉर्म का उपयोग किया जाएगा। इसे सुविधाजनक बनाने के लिए, NCERT और NIC, शिक्षा मंत्रालय एक व्यापक तकनीकी प्लेटफ़ॉर्म विकसित करेंगे। यह प्लेटफ़ॉर्म सभी राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को परामर्श, सर्वेक्षण और स्थिति पत्रों के लिए इलेक्ट्रॉनिक टेम्पलेट प्रदान करेगा, जिसमें केंद्रीय स्तर के नोडल अधिकारियों का

निरंतर समर्थन होगा। सुचारू और कुशल प्रक्रिया सुनिश्चित करने के लिए राज्य अपने स्वयं के नोडल अधिकारी भी नियुक्त करेंगे। एनसीएफ के मसौदे का संविधान की आठवीं अनुसूची में उल्लिखित 22 भाषाओं में अनुवाद किया जाएगा और राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के साथ उनकी प्रतिक्रिया के लिए साझा किया जाएगा। उनके सुझावों को शामिल करने के बाद, एनसीएफ को अंतिम रूप दिया जाएगा और मंजूरी के लिए शिक्षा मंत्रालय को भेजा जाएगा। मंजूरी मिलने के बाद, दस्तावेजों को एससीएफ के मसौदे को अपडेट करने और एनसीएफ को लागू करने के लिए राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों को वितरित किया जाएगा।

- **स्कूली शिक्षा में आईसीटी** पर राष्ट्रीय नीति का उद्देश्य युवाओं को ज्ञान-संचालित समाज के विकास और स्थिरता में सक्रिय रूप से योगदान करने के लिए तैयार करना है। यह इस बात पर जोर देता है कि शिक्षकों और छात्रों को न केवल सूचना का उपभोक्ता होना चाहिए बल्कि सक्रिय उत्पादक भी होना चाहिए। डिजिटल इंडिया अभियान (2015) देश को डिजिटल रूप से सशक्त समाज और ज्ञान अर्थव्यवस्था में बदलने का प्रयास करता है, जो तीन प्रमुख विज्ञान क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करता है।
- **भारत में डिजिटल शिक्षा** को बढ़ावा देने के लिए विभिन्न सरकारी पहलों का लक्ष्य है: इनमें से एक है ई-पीजी पाठशाला, जो ऑनलाइन अध्ययन सामग्री प्रदान करती है। **SWAYAM** ऑनलाइन पाठ्यक्रमों तक पहुँचने के लिए एक व्यापक मंच के रूप में कार्य करता है। NEAT व्यक्तिगत छात्र की ज़रूरतों के अनुसार सीखने के अनुभवों को तैयार करने के लिए कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग करता है। मानव संसाधन विकास मंत्रालय (MHRD) ने PRAGYATA की शुरुआत की, जो डिजिटल शिक्षा के लिए दिशा-निर्देशों की रूपरेखा तैयार करता है। PRAGYATA के अनुसार, किंडरगार्टन, नर्सरी और प्रीस्कूल में युवा शिक्षार्थियों को माता-पिता की बातचीत के लिए प्रतिदिन 30 मिनट से अधिक स्क्रीन समय नहीं मिलना चाहिए। इसके अतिरिक्त, छात्रों के लिए स्कूलों द्वारा प्रदान की जाने वाली लाइव कक्षाएं 1.5 से 3 घंटे तक चलती हैं।

भारत में डिजिटल शिक्षा के लाभ: कोविड-19 महामारी के दौरान, डिजिटल शिक्षा भारत में छात्रों के लिए प्राथमिक शिक्षण पद्धति बन गई।

- यह छात्रों के लिए विभिन्न विषयों में ज्ञान, तकनीकी कौशल और व्यावहारिक अनुभव प्राप्त करने का मुख्य तरीका बन गया।
- डिजिटल शिक्षा भौगोलिक सीमाओं को समाप्त करती है, जिससे छात्र कहीं से भी सीख सकते हैं।
- ऑनलाइन कक्षाएँ और शिक्षण सामग्री हमेशा सुलभ होती हैं, जिससे छात्रों और शिक्षकों के बीच सहज संचार की सुविधा मिलती है।
- इसके अतिरिक्त, डिजिटल शिक्षा पूरक सहायता प्रदान करती है, और सरकार डिजिटलीकरण को किफ़ायती बनाने के लिए प्रेरित हुई है।

भारत में डिजिटल शिक्षा की चुनौतियाँ: अपनी तीव्र वृद्धि के बावजूद, भारत में डिजिटल शिक्षा को महत्वपूर्ण बाधाओं का सामना करना पड़ रहा है।

- डिजिटल शिक्षा के लिए इंटरनेट तक पहुँच बहुत ज़रूरी है, फिर भी कई क्षेत्रों में अभी भी कनेक्टिविटी की कमी है, जिससे प्रगति में बाधा आ रही है।
- निम्न सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि वाले व्यक्ति अक्सर आवश्यक उपकरण और तकनीक नहीं खरीद पाते हैं।
- एक और चुनौती शिक्षकों को प्रशिक्षित करने में है, क्योंकि केवल तकनीकी कौशल वाले लोग ही प्रभावी रूप से ऑनलाइन कक्षाएँ संचालित कर सकते हैं।
- कई सरकारी कॉलेजों और स्कूलों में डिजिटल कक्षाओं के लिए आवश्यक उचित सुविधाओं का अभाव है।
- भारत में डिजिटल शिक्षा: आगे की राह
- भारत की भाषाई विविधता को दर्शाने के लिए स्थानीय भाषाओं में डिजिटल सामग्री बनाएँ।
- कौशल विकास पर केंद्रित वर्चुअल लैब और पाठ्यक्रम शामिल करें।
- सुनिश्चित करें कि डिजिटल शिक्षा तक पहुँच किसी भी समय और कहीं भी उपलब्ध हो।
- शिक्षकों को सर्वोत्तम ई-लर्निंग संसाधनों का उपयोग करने के लिए अपने कौशल को बढ़ाने की आवश्यकता है।

- डिजिटल डिवाइड को पाटने के लिए डिजिटल शिक्षा के लिए दिशा-निर्देश स्थापित करें।
- टेलीविज़न, रेडियो, वेबसाइट और पॉडकास्ट के माध्यम से शिक्षा तक पहुँचने के कई तरीके प्रदान करें।

निष्कर्ष: भारत में, आबादी का एक बड़ा हिस्सा अभी भी निरक्षर है, और कई बच्चे बुनियादी शिक्षा भी प्राप्त नहीं कर पाते हैं। जबकि देश उच्च शिक्षा में विभिन्न चुनौतियों का सामना कर रहा है, इन मुद्दों को संबोधित करना सुधार के लिए महत्वपूर्ण है। उन्नत सूचना और संचार प्रौद्योगिकियों (ICT) के साथ, भारत डिजिटल लाइब्रेरी आंदोलन में सक्रिय भूमिका निभा रहा है। इसमें भारतीय पुस्तकालयों से पारंपरिक ज्ञान, पुराने प्रकाशनों, दुर्लभ दस्तावेजों, शोध प्रबंधों और अकादमिक पत्रिकाओं को डिजिटल बनाना और उन तक मुफ्त पहुँच प्रदान करना शामिल है। नेशनल डिजिटल लाइब्रेरी ऑफ़ इंडिया एक प्रमुख पहल है जिसका उद्देश्य एक व्यापक डिजिटल लाइब्रेरी बनाना है। शीर्ष उच्च शिक्षा एजेंसियों सहित विभिन्न संगठन ओपन कोर्सवेयर और क्रॉस-आर्काइव सर्च सेवाओं पर भी काम कर रहे हैं। भारत विकासशील देशों के बीच डिजिटल लाइब्रेरी आंदोलन का नेतृत्व कर रहा है। सरकार द्वारा प्रवर्तित MOOC व्यापक दर्शकों तक पहुँच रहे हैं, खासकर वे जो पारंपरिक कक्षाओं में भाग लेने में असमर्थ हैं। SWAYAM जैसे प्लेटफ़ॉर्म के माध्यम से ऑनलाइन पाठ्यक्रम ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों को देश के कुछ सर्वश्रेष्ठ संस्थानों से सीखने की अनुमति देते हैं, जिससे उच्च शिक्षा की समग्र गुणवत्ता में सुधार होता है। भविष्य की मांगों को पूरा करने के लिए, वित्तीय संसाधनों, पहुँच, समानता, गुणवत्ता मानकों, प्रासंगिकता, बुनियादी ढाँचे और जवाबदेही का पुनर्मूल्यांकन करने की तत्काल आवश्यकता है। ई-सामग्री का क्षेत्रीय भाषाओं में अनुवाद करने से यह सुनिश्चित होगा कि सभी पृष्ठभूमि के व्यक्ति इसका लाभ उठा सकें। दूरदराज और ग्रामीण क्षेत्रों के कॉलेजों को अपने शिक्षण में डिजिटल सामग्री को शामिल करने के लिए ब्रॉडबैंड और स्मार्ट कक्षाओं से लैस किया जाना चाहिए। शिक्षकों को प्रौद्योगिकी में प्रशिक्षण की आवश्यकता है और उन्हें ई-सामग्री को शामिल करने के लिए अपने पाठ्यक्रम को अनुकूलित करना चाहिए। जागरूकता अभियानों को छात्रों को उपलब्ध मुफ्त डिजिटल संसाधनों के बारे में सूचित करना चाहिए। एक ऐसी शिक्षा प्रणाली जो प्रगतिशील, अनुकूलनीय और सामाजिक, आर्थिक और वैश्विक

परिवर्तनों के प्रति उत्तरदायी हो, आवश्यक है। भारतीय उच्च शिक्षा संस्थानों और नियामक निकायों को प्रमुख मुद्दों की शीघ्र पहचान करनी चाहिए और उन्हें दूर करने के लिए नीतियाँ विकसित करनी चाहिए। केवल एक या दो विश्वविद्यालयों पर निर्भर रहने से कोई महत्वपूर्ण बदलाव नहीं आएगा। यदि सरकार शिक्षा प्रणाली को आगे बढ़ाने वाली पहलों का समर्थन करती है, तो भारत वैश्विक स्तर पर प्रतिस्पर्धा कर सकता है, जिससे दुनिया की सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बनने की आकांक्षा प्राप्त हो सकती है।

सन्दर्भ:

- कपूर, के. (n.d.). भारतीय ज्ञान प्रणाली खंड 1. भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान गांधीनगर.
- संस्कृति पत्रिका. (n.d.). भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली.
- SSRN. (n.d.). भारत की पारंपरिक ज्ञान प्रणाली. [सार].
- MyGov. (n.d.). स्वदेशी ज्ञान प्रणाली (IKS).
- शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार. (n.d.).
- अखिल भारतीय तकनीकी शिक्षा परिषद. (n.d.). www.aicte-india.org
- ज़ेनोडो. (n.d.). www.zenodo.org
- भारतीय प्रबंधन संस्थान बैंगलोर. (n.d.). digest.iimb.ac.in
- सैनी, एम., सिंह, एम., कौर, एम., और कौर, एम. (2021). राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 की स्वीकृति पर भारतीय नागरिकों की व्यवहारिक प्रतिक्रिया की जांच करने के लिए ट्वीट का विश्लेषण करना।
- *अंतर्राष्ट्रीय शैक्षिक विकास जर्नल*, अग्रिम ऑनलाइन प्रकाशन